आज अपनी अचला में तोड़
बंधन कर दूंगा।
मौन, कल की कल्पना में, हो चुके गीत गीले,
मौन [illegible] करते रहे ये नयन नीले,
कौन जाने? क्या कभी तो कल्पना साकार लूंगा!
दूर इंगित हो उठे हैं इन्दु में भी धूल के कण
दूर मुस्कुरा रहे हैं प्राण में भी भूल के स्वर
दूर [illegible] का पास आने का नहीं आधार लूंगा॥
प्राण कहते "[illegible] दीप में जलते रहो तुम"
पथ कहते "हार कर भी जीवन में चलते रहो तुम"
पंथ में ढलता रहा क्या मंजिलों को प्यार दूंगा??
गीत की आकाश-गंगा में बहे सारे सितारे—
दीप भी बहते रहे, बहते रहे उर के किनारे—
'आज भी तो मधु लूंगा, आज ना [illegible] दूंगा!!'
इस अमा की रात में मैं चांद पाने चल रहा हूं,
धूल के मल्हार में मैं याद बनकर ढल रहा हूं;
मेघ घुलते क्यों रहें? संघर्ष से आधार लूंगा!
पंख के भी पर लगे हैं व्योम तक तो ना समाते—
आज मेरे गान बादल बन नहीं तुमको भिगाते—
भीगती-सी भावना में खोल क्यों अब द्वार दूंगा??
आज तक बीती कहानी में बहुत इतिहास बाकी—
आज तक भी सांसों में हैं बहुत [illegible] विश्वास बाकी—
प्यास अब बरसात बनके शाप के अंगार लूंगा!!

[illegible signature]

आज अपनी अचला में तोड़ बंधन वार दूंगा!!!!

६-८-५०
प्रात ६.

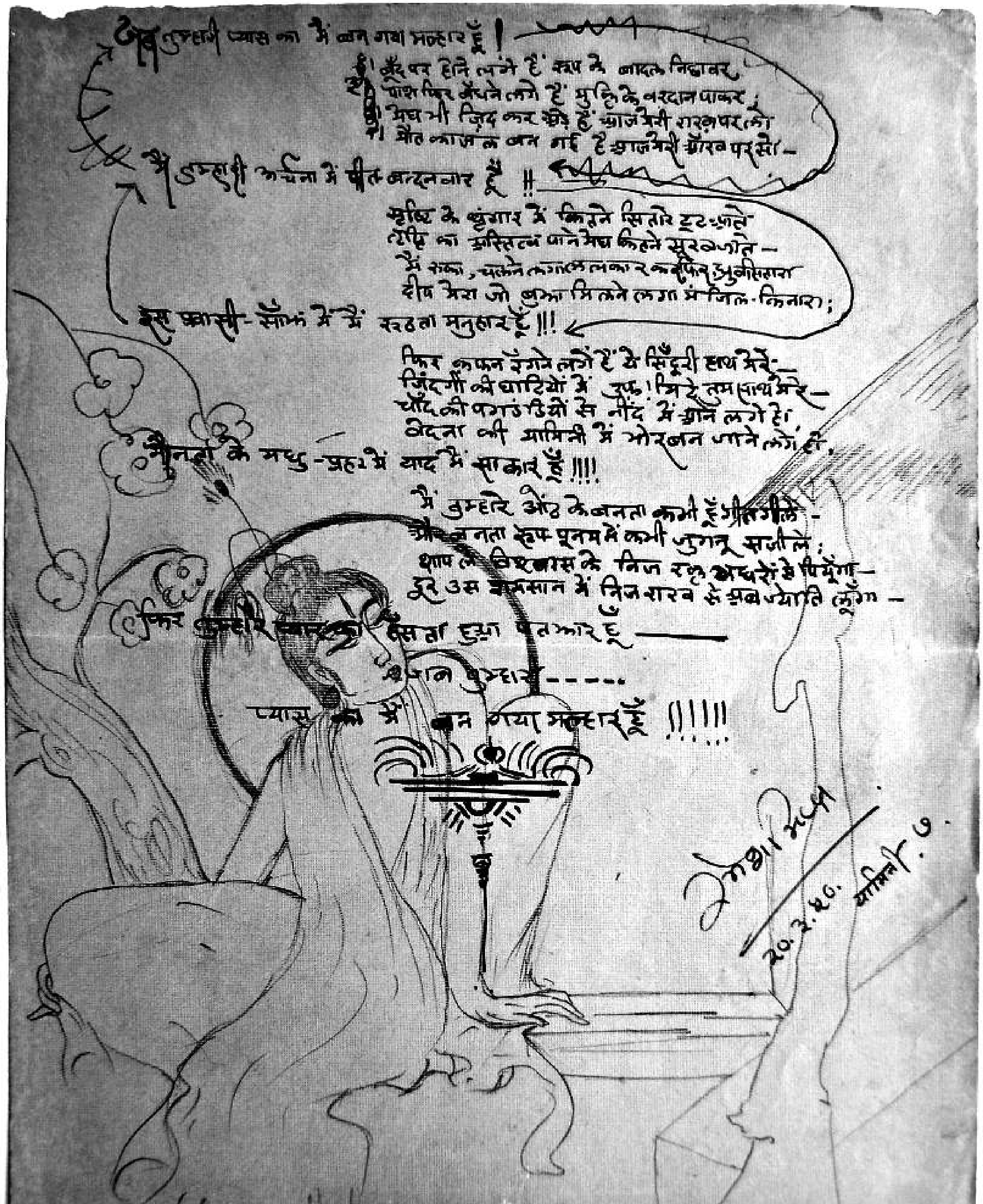

अब तुम्हारी प्यास का मैं बन गया मल्हार हूँ !

बूँद पर होने लगे हैं रूप के बादल निछावर,
पाश फिर बँधने लगे हैं मुक्ति के वरदान पाकर;
मेघ भी ज़िद कर रहे हैं आज मेरी राख पर लो
मौत का जल बन गई है आज मेरी [illegible] पर सो —

मैं तुम्हारी अर्चना में गीत बदलनहार हूँ !!

सृष्टि के श्रृंगार में कितने सितारे टूट जाते
दृष्टि का अस्तित्व पाने मेघ कितने सूख जाते —
मैं रुका, चलने लगा [illegible] अभिसारा
दीप मेरा जो बुझा मिलने लगा मंजिल-किनारा;

इस उदासी-साँझ में मैं रूठता मनुहार हूँ !!!

फिर कफ़न रंगने लगे हैं ये सिंदूरी हाथ मेरे —
ज़िंदगी की घाटियों में उफ़! मिटे तम साथ मेरे —
चाँद की पगडंडियों से नींद में आने लगे हैं,
वेदना की यामिनी में भोर बन जाने लगे हैं,

यौवना के मधु-प्रहर में याद मैं साकार हूँ !!!!

मैं तुम्हारे ओंठ के बनता कभी हूँ गीत गीले —
और बनता रूप पूनम में कभी जुगनू सजीले;
श्राप ले विश्वास के निज रक्त अधरों से पियूँगा —
दूर उस [illegible] में निज राख से [illegible] ज्योति लूँगा —

फिर तुम्हारे प्यार का हँसता हुआ पतझार हूँ ———
[illegible] तुम्हारे -----
प्यास का मैं बन गया मल्हार हूँ !!!!!!

[illegible]
20.2.50. यामिनी 7.

स्वप्न और
drawn on 12th Sep '51